# 'सफलता भव वर्ष' में सदा के लिये बापदादा से 'सफलता भव' का वरदान प्राप्त करने की विधि : शक्तिशाली अमृतवेला

| | | |
|---|---|---|
| 2.00 बजे | : | गुडमार्निंग |
| 2.00 से 2.15 | : | बापदादा से मिलन की पूर्व – तैयारी |
| 2.15 से 2.30 | : | श्रेष्ठ स्वमान द्वारा समर्थ स्थिति का अनुभव |
| 2.30 से 2.45 | : | बापदादा से सर्व वरदानों का अनुभव |
| 2.45 से 3.00 | : | बापदादा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव |
| 3.00 से 3.15 | : | सर्व प्राप्तियों का अनुभव |
| 3.15 से 3.30 | : | Relaxation - देही-अभिमानी होकर सैर करना |
| 3.30 से 3.45 | : | रूहानी ड्रिल |
| 3.45 से 4.00 | : | बिन्दु रूप / कम्बाइन्ड स्वरूप |
| 4.00 से 4.15 | : | फरिश्ता स्वरूप |
| 4.15 से 4.30 | : | विश्व-परिक्रमा |
| 4.30 से 4.45 | : | मा. ज्ञान सूर्य, लाइट हाउस, माइट हाउस स्वरूप |

## 2.00 बजे : गुडमार्निंग :–

अमृतवेले आँख खुलते ही बुद्धि रूपी नेत्र के सामने बापदादा को वरदानी-मुद्रा में देखें और संकल्प करें – ''गुडमार्निंग बापदादा, नमस्ते! मैं जो हूँ, जैसा हूँ, आपका/आपकी हूँ आप भी मेरे हो बाबा!'' फिर बापदादा का वरद-हस्त अपने सिर पर अनुभव करें और 'सदा विजयी भव', एवं 'सफलता का सितारा भव' का वरदान लें।

## 2.00 से 2.15 : बापदादा से मिलन की पूर्व तैयारी :–

शैय्या त्याग करने के बाद बहुत ही खुशी-खुशी में स्वयं को तैयार करे। स्वयं को अवतरित हुआ अनुभव करे। देही-अभिमानी स्थिति में मुँह, हाथ, पाँव आदि धुलाई कर तथा रात्रि को वस्त्रों को बदली कर तैयार हो जायें बापदादा से मिलन मनाने के लिए। मन में अपार आनन्द अनुभव हो तथा संकल्प करें – ''अहो हो! मुझसे मिलने के लिए स्वयं बापदादा इन्तज़ार कर रहे हैं। जिनका एक सेकेण्ड का दर्शन करने के लिए सारा संसार प्यासा है – वह मेरा पिता है तो माता भी है, शिक्षक, गुरु, सखा और साजन सबकुछ है। अहो, मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ! बाबा से सर्व प्राप्ति कर, मैं विश्व का मालिक बनने जा रहा हूँ।''

## 2.15 से 2.30 : समर्थ स्थिति का अनुभव :–

सर्व समर्थ बापदादा से मधुर मिलन भी तब हो सकता है, जब हमारी स्थिति समर्थ हो। इसलिए बापदादा के सम्मुख बड़े प्यार से और नशे से स्वयं को फरिश्ते रूप में अनुभव करें। संकल्प हो –

''अहो, मैं कितनी पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ! स्वयं सर्व-शक्तिवान, पतित-पावन, सर्व का सद्गति-दाता बाबा मेरे सामने हैं। सारे कल्प में और इस अलौकिक जीवन में भी ये कितनी सुन्दर घड़ियाँ हैं! अहो, बाबा आप से बिछुड़े हुए कितना समय हो गया! आपने फिर से मुझे अपना बना लिया। मुझे अपना बच्चा बना कर फिर से विश्व की बादशाही दे रहे हो।'' ऐसे-ऐसे संकल्प द्वारा स्वयं को समर्थ अनुभव करें।

## 2.30 से 2.45 : सर्व वरदानों का अनुभव :–

स्वयं को फरिश्ता स्वरूप में बापदादा के सम्मुख देखें और यही अनुभव हो – स्वयं बापदादा अपने एक-एक वरदान को तीन बार उच्चारण करते हुए मुझ आत्मा को वरदानी मूर्त बना रहे हैं। कुछ एक मुख्य वरदानों की लिस्ट यहाँ सूचित की जा रही है जिसका बापदादा से लेने का अभ्यास नित्य करें तथा हरेक वरदान लेते समय उसका वह स्वरूप भी अनुभव करें।

## मुख्य वरदानों की लिस्ट :--

- विजयी रत्न भव
- सफलता का सितारा भव
- विश्व कल्याणकारी भव
- मास्टर सर्वशक्तिवान भव
- स्वदर्शन चक्रधारी भव
- सम्पूर्ण पवित्र भव
- अचल, अडोल, निर्विघ्न भव
- न्यारे और प्यारे भव, संगदोष से मुक्त भव
- स्वराज्य अधिकारी भव, विश्व राज्य अधिकारी भव
- नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा भव
- निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी भव
- अशरीरी, अकाय, विदेही भव
- अव्यक्त, आकारी फरिश्ता भव
- सन्तुष्ट मणि, मस्तक मणि, दिल तख्तनशीन भव
- स्व-पसन्द, लोक-पसन्द, प्रभु-पसन्द भव
- दानी, महादानी, वरदानी भव
- त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी भव
- आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार फरमानबरदार भव
- नालेजफुल, पॉवरफुल, ब्लिसफुल, सर्विसएबुल, इसेन्सफुल, सक्सेसफुल, लवफुल, फेथफुल, चियर फुल भव

- सर्व बन्धनमुक्त भव
- सम्पूर्ण समर्पण भव
- निद्राजीत, प्रकृतिजीत, कर्मेन्द्रियजीत, मनजीत मायाजीत, जगतजीत भव
- साथी भव, साक्षी भव
- आधार और उद्धार मूर्त भव
- निरोगी, तन्दुरुस्त भव
- लास्ट सो फास्ट, सो फर्स्ट भव; तीव्र पुरुषार्थी भव
- बाप समान भव

## 2.45 से 3.00 : सर्व सम्बन्धों का अनुभव :–

बाबा हमारा सर्व सम्बन्धी है। अव्यक्त वतन में आकारी रूप में बापदादा को भिन्न-भिन्न सम्बन्धों के स्वरूप में देखें और स्वयं का स्वरूप भी परिवर्तन करते हुए मिलन का आनन्द लें।

**पिता :-** सफेद-सफेद बूढ़ा बाबा बाहें पसारे बुला रहे हैं, अपनी गोदी में समाने के लिए। स्वयं को एक नन्हा सा फरिश्ता अनुभव करें और समा जायें बाबा की गोदी में। ''अहो बाबा, मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ। मैंने तो न स्वप्न में, न ख्याल और न ही ख्वाबों में सोचा था कि आप से ऐसे मिलन मनाऊँगा। मैं तो स्वयं को, अपने घर को और आप प्राणों से भी प्यारे पिता को भूल कर, कितना दु:खी हो गया था! आपने मुझे अपना परिचय दे कर, अपना धर्म का बच्चा बनाया। अपने कन्धे पर बिठा कर सारा वर्सा दे रहे हो। प्यारे बापदादा मैं आपका सुपुत्र बन कर जरूर आपका नाम बाला करूँगा। आपकी दाढ़ी की लाज़ रखूँगा। ब्राह्मण कुल की लाज़ रखूँगा। यज्ञ-रक्षक बन आपकी श्रीमत अनुसार चल आपका गद्दी-नशीन बनूँगा बाबा!''

**माता :-** ''बाबा आप मेरी माँ भी हो। मुझे सवेरे-सवेरे ही स्नेह और शक्तियों द्वारा पालना दे कर, बाप समान बना रहे हो। मैं आपकी पालना का अवश्य रिटर्न करूँगा बाबा।''

**शिक्षक :-** ''बाबा आपने तो कमाल कर दिया! जो ज्ञान संसार के किसी भी पण्डित-विद्वानों के पास, शास्त्रज्ञ-वेदज्ञ के पास, वैज्ञानिक-फिलोसॉफर के पास नहीं है ऐसा अमूल्य ज्ञान दे कर आपने मास्टर ज्ञान सागर बना दिया। मुझे तीनों लोकों का तीनों कालों का, ज्ञान देकर त्रिलोकीनाथ बना दिया, त्रिकालदर्शी बना दिया! अहो बाबा मैं कितना पदमापदम भाग्यशाली हूँ!''

**गुरु :-** ''बाबा, आप मेरे सतगुरु भी हो। मनुष्य आज अनेक झूठे गुरुओं का सहारा लेकर पथ भ्रष्ट हो गया है। आहा! मैं कितना भाग्यशाली हूँ, अब मुझे आपने अपने घर का और राजधानी का रास्ता बता दिया। मेरा भटकना अब बन्द हो गया है। आपको पाकर मुझे सर्व वरदान और मनमनाभव का श्रेष्ठ मन्त्र मिल गया है, अब तो मैं धन्य-धन्य हो गया हूँ।''

**सखा, बन्धु :-** ''बाबा, अब तो दिनोंदिन मैं स्वयं को निश्चिंत अनुभव कर रहा हूँ। सारा ही कार्य-व्यवहार खेल-सा प्रतीत हो रहा है। आप मेरी परछाई समान सदा साथ-साथ मददगार हो। क्यों मैं चिन्ता करूँ? आप मेरे हाथ से हाथ मिला कर हर कार्य में सहयोगी हो। मेरे दिल के मीत हो मेरे सुख-दु:ख के साथी हो। फिर मुझे किस बात की चिन्ता है? पल-पल आपके साथ का अनुभव कितना सुन्दर है!''

**स्वामी, बच्चा :-** ''बाबा, आप मेरा साजन हो, माशूक हो। आप ही मेरा संसार हो। आपका बन कर मैं कितना निश्चिंत हूँ, निर्भय हूँ! आपका सहारा पाकर मैं धन्य हूँ। हे मन के मीत, हे प्राणेश्वर, यह हाथ और साथ मेरा अन्तिम श्वांस तक कभी भी नहीं छूटे। स्वप्न में भी आप से जुदाई न हो। आप मेरा बच्चा भी हो। अब इस जीवन का सबकुछ आपके लिए है और आप ही मेरा सर्वस्व हो बाबा।

**बाबा**, आप मेरे जीवन के बागवान हो, माली हो, खिवैय्या हो। अब मेरा समय, संकल्प, श्वांस, तन-मन-धन-जन सबकुछ आपका ही है। आप मुझे जैसे संवारना चाहो, जैसे सुरक्षित करना, शोभित करना चाहो... आपकी इच्छा। मेरी कोई भी इच्छा नहीं, तमन्ना नहीं। आपको पाकर तो मैंने सबकुछ पा लिया है। बाबा, अब सिर्फ एक ही शुभ आश है – जल्दी-से-जल्दी आप समान बनूँ और विश्व सेवा-अर्थ मेरा सबकुछ सफल हो जाये। आपको विश्व के सामने प्रत्यक्ष करूँ, बस।''

## 3.00 से 3.15 : सर्व प्राप्तियों का अनुभव :–

परमधाम में शिव बाबा को एक शक्तिशाली चमकता हुआ दिव्य सितारा के रूप में देखें तथा स्वयं को उनके सामने एक प्रकाश का पुँज के रूप में अनुभव करें। फिर उनसे लेजर की तरह सर्व शक्तियों की, सर्व गुणों की शक्तिशाली किरणें स्वयं पर पड़ने का सुखद अनुभव करें। ''अहो, बाबा से मुझ पर अथाह लाइट और माइट, शान्ति, शक्ति, प्रकाश और प्रेम की किरणें पड़ रही हैं। मुझ आत्मा के अनेक जन्मों के विकर्म जैसेकि दग्ध हो रहे हैं। जन्म-जन्मान्तर के अपवित्रता की कोटिंग (परत) जैसेकि मेल्ट (पिघल) हो रही है। परिणाम स्वरूप मैं आत्मा भी अब बाप समान पावन बनती जा रही हूँ। बाप समान मेरी स्थिति बनती जा रही है। बाबा से सर्व प्राप्तियों का अनुभव कर मैं आत्मा, आनन्दित हो रही हूँ।''

## 3.30 से 3.45 : रूहानी ड्रिल :–

अपने मन-बुद्धि पर सम्पूर्ण नियन्त्रण के लिए, संकल्पों को ब्रेक लगाने, मोड़ने के लिए तथा अन्तिम पेपर में बापदादा के इशारों को कैच कर एक सेकेण्ड में अशरीरी बनने के लिए और पास विद् ऑनर बनने के लिए इस ड्रिल का बहुतकाल का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। जैसे तन को तन्दुरुस्त रखने के लिए शारीरिक ड्रिल करते हैं ऐसे मन-बुद्धि (आत्मा) को निरोगी बनाने के लिए यह अभ्यास करें। शारीरिक ड्रिल में 1, 2, 3, 4 इन शब्दों का उच्चारण करते हुए भिन्न-भिन्न पोस्चर्स में स्वयं (हाथ-पाँव) को स्थित करते हैं। ठीक इसी रीति से, रूहानी ड्रिल में भी निम्नलिखित 4 स्थितियों में स्थित रहने का अभ्यास करें। पहले कुछ मिनट में उसी स्वरूप का अनुभव करें। अभ्यास के बाद एक-एक सेकेण्ड में एक-एक स्वरूप का परिवर्तन कर ड्रिल करें।

**साकारी**:- स्वयं को साकार शरीर में भृकुटी के बीच चमकता हुआ एक दिव्य सितारा अनुभव करें। मैं आत्मा राजा हूँ, मालिक हूँ – मन, बुद्धि, संस्कार और सारी कर्मेन्द्रियाँ मेरे अधीन हैं। मैं इन्हें जैसे चाहूँ चला सकता हूँ। मैं स्वराज्य अधिकारी कर्मेन्द्रियजीत हूँ। साथ-साथ ऊन स्वरूप का भी अनुभव करते जायें।

**आकारी**:- देखते-देखते मुझ आत्मा के चारों ओर का साकारी शरीर आकारी रूप में परिवर्तित हो गया। मैं अब डबल लाइट फरिश्ता हूँ। लाइट के वस्त्रधारी, लाइट के ताजधारी, लाइट ही मेरे श्रृंगार है। मेरे चारों ओर एक प्रकाश का कार्ब है। मेरे मस्तक के चारों ओर लाइट का एक सुन्दर क्रॉऊन है। हिम्मत और उमंग-उल्हास रूपी दो पंख कितने सुन्दर हैं! मैं फरिश्ता प्रभु-सन्देश वाहक हूँ, शुभ चिन्तक हूँ।

**निराकारी**:- अब मेरे दोनों साकारी अथवा आकारी शरीर नहीं हैं। मैं आत्मा ज्योति बिन्दु रूप हूँ। प्रकाश का पुँज हूँ, एक लाइट हूँ, एक माइट हूँ, परमधाम में हूँ।

**निर्विकारी**:- अब मैं आत्मा निर्विकारी चतुर्भुज विष्णु स्वरूप हूँ। मेरे चारों हाथों में चार अलंकार हैं – शंख, चक्र, गदा और पद्म।

डबल सिरताज़ हूँ, मेरे गले में वैजयन्ती माला है।

इस प्रकार ड्रिल की शुरुआत में एक मिनट के लिए उपरोक्त संकल्पों के आधार से, अपना वह स्वरूप बनायें। बाद में फिर एक-एक सेकेण्ड में 'साकारी' संकल्प करते ही – स्वराज्य अधिकारी स्वरूप का चित्र बुद्धि रूपी नेत्र के सामने हो तथा अनुभव हो कि मैं वही हूँ। 'आकारी' सोचते ही स्वयं को – फरिश्ता स्वरूप में अनुभव करें। 'निराकारी' और 'निर्विकारी' संकल्प करते ही एक-एक सेकेण्ड में ज्योतिबिन्दु तथा विष्णु स्वरूप में अनुभव करें। ऐसे उपरोक्त चारों स्वरूपों की पुनरावृत्ति कर, ड्रिल का अभ्यास करें। यह अभ्यास अमृतवेले शान्ति के वातावरण में वॉल क्लॉक की टिक्-टिक् साऊण्ड के साथ संकल्प रूपी कदम मिलाते हुए किया जा सकता है।

**3.45 से 4.00 : बिन्दुरूप / कम्बाइन्ड रूप :-**

रूहानी ड्रिल का अभ्यास करते-करते स्वयं को एक स्वरूप में कुछ मिनटों तक एकाग्र होने का अभ्यास करें। फिर ड्रिल की पुनरावृत्ति करें। अन्त में स्वयं को निराकारी दुनिया में बिन्दु रूप में एकाग्र कर दें। शिव बाबा के साथ कम्बाइन्ड स्वरूप का भी अनुभव करें। अनुभव हो – मैं भी बाप समान एक लाइट हाउस, माइट हाउस हूँ। मेरे चारों ओर अथाह लाइट और माइट की किरणें फैल रही हैं।

**4.00 से 4.15 : फरिश्ता स्वरूप :-**

फिर से अपना डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप रचें और स्वयं को अन्तरिक्ष में बापदादा के साथ ले चलें। एक सुन्दर लाइट के पुष्पक विमान पर बापदादा के साथ फरिश्ते रूप में विश्व-परिक्रमा करने हेतु तैयार हो जायें।

**4.15 से 4.30 तक :–**

अन्तरिक्ष से सारी पृथ्वी पर नज़र दोहरायें। स्वयं को तथा बापदादा को त्रिमूर्ति लाइट स्वरूप में अनुभव करें। मस्तक के चारों और लाइट का ताज, भृकुटी सिंहासन पर आत्मा मणि - लाइट के रूप में और दोनों नयनों से शक्तिशाली तेज़ लाइट की किरणें निकल रही हैं – ऐसे त्रिमूर्ति लाइट स्वरूप का अनुभव हो। अपने वरदानी हाथों से भी लाइट की रेज़ (किरणें) निकल रही हैं तथा विश्व की अनगिनत आत्माओं पर फैलाने का दृश्य अवलोकन करें। एक-एक देश में परिक्रमा लगा कर अनेक दु:खी, अशान्त, भटकती हुई आत्माओं की सन्देश और सकाश द्वारा सेवा करें। ''हे आत्मायें – जागो। अब तक सोये हुए हो? देखो तो, सवेरा हो रहा है। ज्ञान सूर्य शिव पिता अब धरा पर आ चुके हैं। यह देखो मेरे ब्रह्मा बाबा को, इनमें वह ज्ञान सागर पतित-पावन, दु:खहर्ता-सुखकर्ता सर्व के सद्गति दाता बाप आकर अब सारी सृष्टि का परिवर्तन कर रहे हैं। अब थोड़े समय के बाद इस कलियुग का महाविनाश हो, अन्त होने वाला है; फिर सृष्टि पर सतयुग आयेगा। जागो। अब अपने रूहानी बाप को पहचान कर उनसे सतयुगी दुनिया का वर्सा ले लो। देखो, अब नहीं तो कब नहीं।'' – इस प्रकार संकल्प द्वारा सर्व आत्माओं को सन्देश दें और बापदादा के साथ सर्व आत्माओं पर सकाश फैलायें। प्रकृति के तत्वों पर भी लाइट- माइट फैला कर पावन बनाने की सेवा करें।

**4.30 से 4.45 : मा. ज्ञान सूर्य (लाइट हाउस, माइट हाउस) :–**

विश्व-परिक्रमा के बाद, स्वयं को पृथ्वी के ऊपर अन्तरिक्ष में बापदादा के साथ कम्बाइन्ड मास्टर ज्ञान सूर्य के रूप में अनुभव करें। अनुभव हो शक्तिशाली शान्ति, शक्ति, प्रकाश, प्रेम और आनन्द की किरणें मुझ से निकल-निकल कर अनगिनत दु:खी, अशान्त आत्माओं की प्यास बुझा रही हैं। सारी सृष्टि तमोप्रधान से बदल सतोप्रधान बन रही है, फिर से पवित्रता का राज्य स्थापन हो रहा है।

अनगिनत भक्त आत्मायें, साधु, सन्त, महात्मायें, धर्मात्मायें बाबा का परिचय पा रहे हैं तथा मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा ले रहे हैं। गणिकायें, अहिल्यायें भी बाप का परिचय पाकर धन्य-धन्य हो रही हैं। संसार के धर्म नेतायें, राज्य नेतायें, शिक्षा नेता, अर्थ नेता, विज्ञान नेता तथा अभिनेतायें भी बाप से अंचली ले रहे हैं। बाबा के बच्चे भी स्नेह-सहयोग की किरणें ले तीव्र पुरुषार्थी बन रहे हैं। एडवांस पार्टी की आत्माओं को खुशखबरी मिल रही है कि बाबा का कार्य बहुत ही जोर-शोर से चल रहा है।

इस प्रकार सोर संसार की सेवा में तत्पर मैं आत्मा, स्वयं को धन्य-धन्य अनुभव कर रही हूँ, बापदादा का दिल से शुक्रिया अदा कर रहा हूँ – ''वाह बाबा! वाह!'', ''वाह ड्रामा! वाह!'', ''वाह मेरा भाग्य! वाह!''

अच्छा - ओम् शान्ति

**स्वमान :-** मैं साकार देह से न्यारा प्रकाशमय कायाधारी सर्वशक्तियों से सम्पन्न बाप समान परम पवित्र फरिश्ता हूँ।

**विज़न :-** मैं प्रकाशमय कायाधारी फरिश्ता सूक्ष्मवतन में प्रकाशमय कायाधारी बापदादा के सन्मुख हूँ...। बापदादा अपनी पॉवरफुल दृष्टि से मुझे विश्व को पावन बनाने के लिए सम्पूर्ण पवित्रता की लाइट और माइट से चार्ज कर रहे हैं...। इसी दृश्य में मन और बुद्धि को एकाग्र करते हुए समर्थ स्थिति का अनुभव करें।

अब मैं प्रकाशमय काया में पवित्रता का सूर्य विराजमान हूँ, बापदादा का हाथ मेरे सिर के उपर है, मुझसे निकलती हुई पवित्रता की ज्वाला रूपी किरणें विश्व की सर्व आत्माओं सहित पाँचों तत्वों को भी सम्पूर्ण सतोप्रधान बना रही है..., मेरे दिव्य नेत्रों से योगाग्नि की ज्वाला निकलकर समस्त विश्व में व्याप्त अपवित्रता रूपी किचड़े को भस्म कर रही है...।

मैं आत्मा अब अपने प्रकाशमय आकारी रूप को छोड़ अपने मूलवतन में जा रही हूँ...। शिवबाबा मुझे अपने साथ स्वीट होम का अनुभव कराने के लिए ले जा रहे हैं..., मैं स्वीट होम में प्रवेश कर चुकी हूँ..., अब अनुभव कीजिए अपने तीसरे शक्तिशाली दिव्य नेत्र से... शिवबाबा सूर्य समान मेरे सामने हैं..., अति पॉवरफुल बीजरूप स्टेज का अनुभव कीजिए..., खो जाइये एक बिन्दू शिवबाबा में... ले लीजिए पूरा परम आनन्द... अब मैं अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं को अनादि स्वरूप का अनुभव करा रही हूँ..., शिवबाबा मुझ आत्मा द्वारा सर्व आत्माओं को आत्मा के निजी सातों गुणों ज्ञान, पवित्रता, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम और शक्ति की अनुभूति करा रहे हैं... तो बस, इसी में मगन रहें और पॉवरफुल मन्सा सेवा में भी तत्पर रहे...। अच्छा, फिर नीचे साकार वतन में आइये, फिर उपर में निराकारी वतन में जाइये... ऐसे बार-बार रूहानी ड्रिल करते हुए पूरा ही समय शक्तिशाली स्थिति से वातावरण को पॉवरफुल बनायें। अच्छा।